



Shiva verma

13 Mar 2007

07:50 PM

Lucknow

Model: Web-MyKundli

Order No: 121749301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 13/03/2007
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 19:50:00 घंटे
इष्ट _____: 33:47:43 घटी
स्थान _____: Lucknow
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:50:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:06:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:43:36 घंटे
वेलान्तर _____: -00:09:38 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:06:57 घंटे
सूर्योदय _____: 06:18:54 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:13:33 घंटे
दिनमान _____: 11:54:39 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 28:39:49 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 20:58:31 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: भू-भूपेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1928	फाल्गुन	22
पंजाबी	संवत : 2063	फाल्गुन	30
बंगाली	सन् : 1413	फाल्गुन	28
तमिल	संवत : 2063	मासी	29
केरल	कोल्लम : 1182	कुंभम	29
नेपाली	संवत : 2063	फाल्गुन	29
चैत्रादि	संवत : 2063	चैत्र	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2063	फाल्गुन	कृष्ण 9

पंचांग

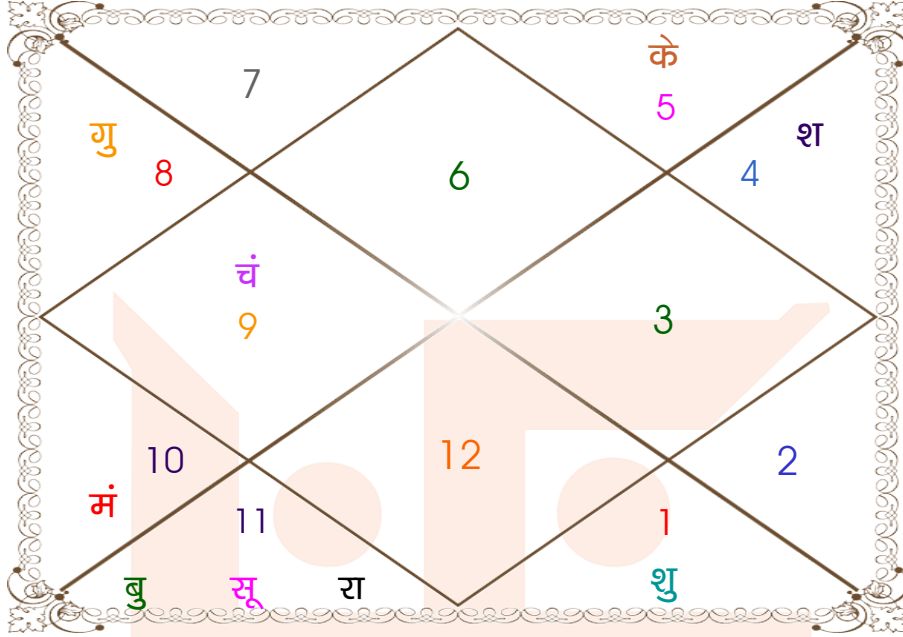
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:54:18
जन्म तिथि _____ : 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:37:58 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढा
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 23:53:08 घंटे
जन्म योग _____ : व्यतिपात
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 09:55:56 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 10:30:06
भभोग _____ : 60:28:13
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 16 वर्ष 6 मा 26 दि

घात चक्र

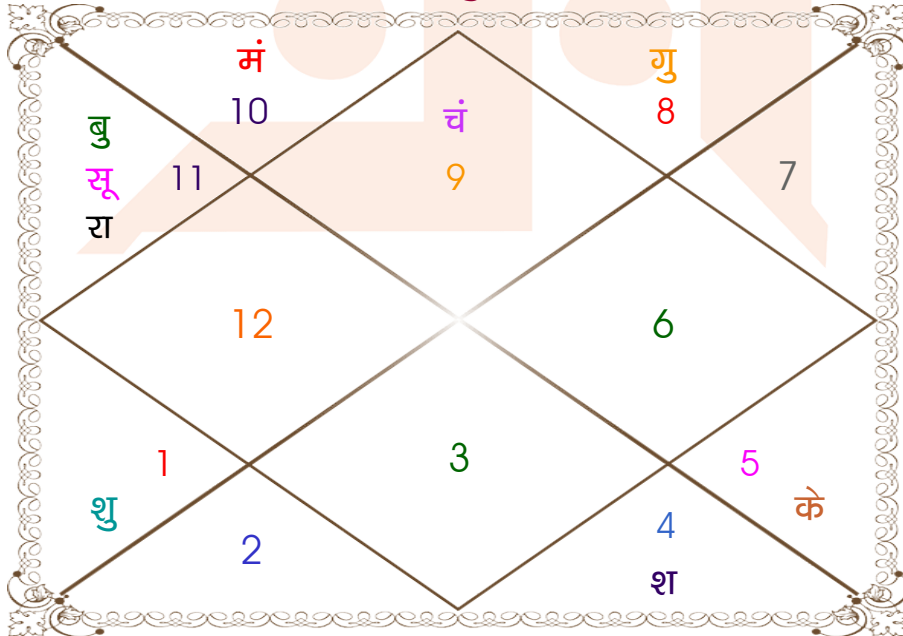
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	शु		
रा सू बु			श
मं			के
चं	गु		ल

लग्न कुंडली

	शु	रा सू बु
श		मं
के	ल	चं गु

विंशोत्तरी
शुक्र 16वर्ष 6मा 26दि

शुक्र

13/03/2007

09/10/2123

शुक्र	08/10/2023
सूर्य	08/10/2029
चन्द्र	08/10/2039
मंगल	08/10/2046
राहु	08/10/2064
गुरु	08/10/2080
शनि	08/10/2099
बुध	09/10/2116
केतु	09/10/2123

योगिनी

सिद्धा 5वर्ष 9मा 18दि

धान्या

31/12/2023

30/12/2026

धान्या	31/03/2024
भ्रामरी	31/07/2024
भद्रिका	30/12/2024
उल्का	01/07/2025
सिद्धा	30/01/2026
संकटा	30/09/2026
मंगला	31/10/2026
पिंगला	30/12/2026

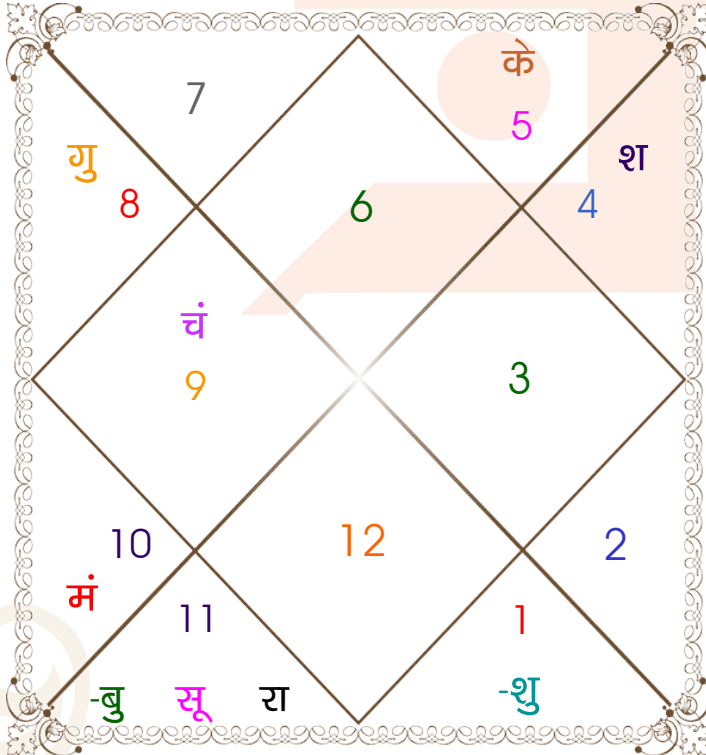
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	20:58:31	320:49:49	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
सूर्य			कुंभ	28:39:49	00:59:52	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			धनु	15:37:06	13:05:27	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	सम राशि
मंगल			मक	17:50:44	00:45:47	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	उच्च राशि
बुध			कुंभ	02:51:30	00:29:43	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
गुरु			वृश्चि	24:58:29	00:04:16	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
शुक्र			मेष	00:48:34	01:12:48	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
शनि	व		कर्क	25:23:35	00:03:39	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
राहु			कुंभ	22:09:52	00:00:59	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु			सिंह	22:09:52	00:00:59	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	21:10:37	00:03:25	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	---
नेप			मक	26:44:30	00:02:00	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	---
प्लूटो			धनु	04:54:57	00:00:36	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
दशम भाव			मिथु	21:28:02	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	गुरु	--

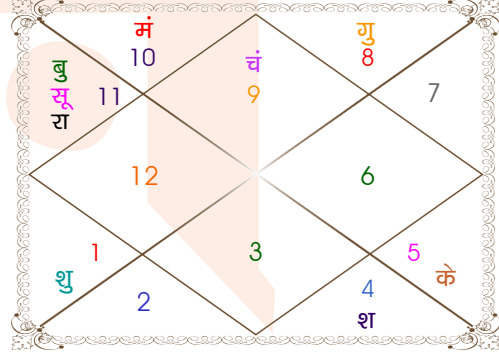
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:57:32

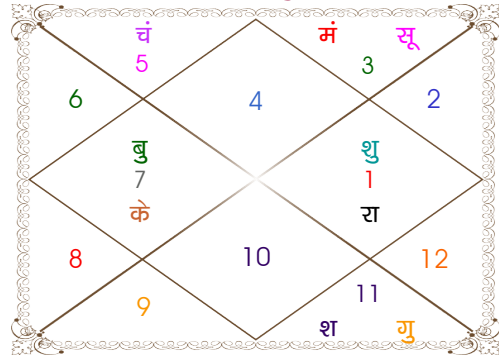
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 06:03:26	कन्या 20:58:31
2	तुला 06:03:26	तुला 21:08:21
3	वृश्चिक 06:13:16	वृश्चिक 21:18:12
4	धनु 06:23:07	धनु 21:28:02
5	मकर 06:23:07	मकर 21:18:12
6	कुम्भ 06:13:16	कुम्भ 21:08:21
7	मीन 06:03:26	मीन 20:58:31
8	मेष 06:03:26	मेष 21:08:21
9	वृष 06:13:16	वृष 21:18:12
10	मिथुन 06:23:07	मिथुन 21:28:02
11	कर्क 06:23:07	कर्क 21:18:12
12	सिंह 06:13:16	सिंह 21:08:21

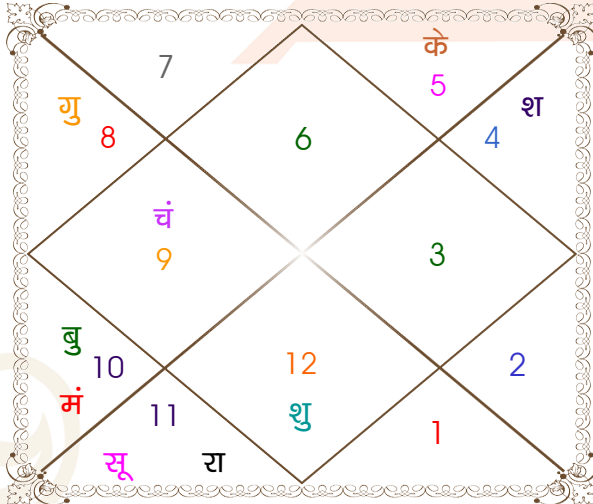
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	20:58:31
2	तुला	19:41:56
3	वृश्चिक	20:06:07
4	धनु	21:28:02
5	मकर	23:03:39
6	कुम्भ	23:27:09
7	मीन	20:58:31
8	मेष	19:41:56
9	वृष	20:06:07
10	मिथुन	21:28:02
11	कर्क	23:03:39
12	सिंह	23:27:09

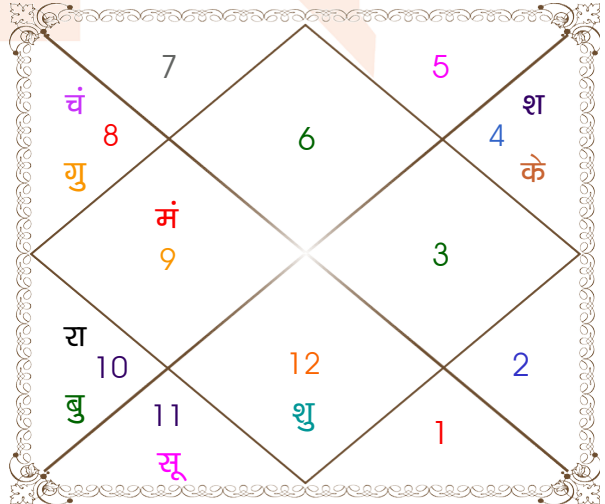
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 16 वर्ष 6 मास 26 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
13/03/2007	08/10/2023	08/10/2029	08/10/2039	08/10/2046
08/10/2023	08/10/2029	08/10/2039	08/10/2046	08/10/2064
13/03/2007	सूर्य 26/01/2024	चंद्र 08/08/2030	मंगल 06/03/2040	राहु 20/06/2049
सूर्य 07/02/2008	चंद्र 27/07/2024	मंगल 09/03/2031	राहु 24/03/2041	गुरु 14/11/2051
चंद्र 08/10/2009	मंगल 01/12/2024	राहु 07/09/2032	गुरु 28/02/2042	शनि 20/09/2054
मंगल 08/12/2010	राहु 26/10/2025	गुरु 07/01/2034	शनि 09/04/2043	बुध 08/04/2057
राहु 08/12/2013	गुरु 14/08/2026	शनि 09/08/2035	बुध 05/04/2044	केतु 27/04/2058
गुरु 08/08/2016	शनि 27/07/2027	बुध 07/01/2037	केतु 01/09/2044	शुक्र 27/04/2061
शनि 08/10/2019	बुध 02/06/2028	केतु 08/08/2037	शुक्र 01/11/2045	सूर्य 21/03/2062
बुध 08/08/2022	केतु 08/10/2028	शुक्र 09/04/2039	सूर्य 09/03/2046	चंद्र 20/09/2063
केतु 08/10/2023	शुक्र 08/10/2029	सूर्य 08/10/2039	चंद्र 08/10/2046	मंगल 08/10/2064

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
08/10/2064	08/10/2080	08/10/2099	09/10/2116	09/10/2123
08/10/2080	08/10/2099	09/10/2116	09/10/2123	00/00/0000
गुरु 26/11/2066	शनि 11/10/2083	बुध 07/03/2102	केतु 07/03/2117	शुक्र 08/02/2127
शनि 08/06/2069	बुध 21/06/2086	केतु 04/03/2103	शुक्र 07/05/2118	सूर्य 14/03/2127
बुध 14/09/2071	केतु 30/07/2087	शुक्र 02/01/2106	सूर्य 12/09/2118	00/00/0000
केतु 20/08/2072	शुक्र 29/09/2090	सूर्य 09/11/2106	चंद्र 13/04/2119	00/00/0000
शुक्र 21/04/2075	सूर्य 11/09/2091	चंद्र 09/04/2108	मंगल 09/09/2119	00/00/0000
सूर्य 07/02/2076	चंद्र 11/04/2093	मंगल 06/04/2109	राहु 27/09/2120	00/00/0000
चंद्र 08/06/2077	मंगल 21/05/2094	राहु 25/10/2111	गुरु 02/09/2121	00/00/0000
मंगल 15/05/2078	राहु 27/03/2097	गुरु 30/01/2114	शनि 12/10/2122	00/00/0000
राहु 08/10/2080	गुरु 08/10/2099	शनि 09/10/2116	बुध 09/10/2123	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 16 वर्ष 6 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
26/10/2025		14/08/2026		27/07/2027		02/06/2028		08/10/2028	
14/08/2026		27/07/2027		02/06/2028		08/10/2028		08/10/2029	
गुरु	04/12/2025	शनि	08/10/2026	बुध	09/09/2027	केतु	09/06/2028	शुक्र	08/12/2028
शनि	19/01/2026	बुध	26/11/2026	केतु	27/09/2027	शुक्र	01/07/2028	सूर्य	26/12/2028
बुध	02/03/2026	केतु	17/12/2026	शुक्र	18/11/2027	सूर्य	07/07/2028	चंद्र	25/01/2029
केतु	19/03/2026	शुक्र	13/02/2027	सूर्य	04/12/2027	चंद्र	18/07/2028	मंगल	16/02/2029
शुक्र	07/05/2026	सूर्य	02/03/2027	चंद्र	30/12/2027	मंगल	25/07/2028	राहु	11/04/2029
सूर्य	21/05/2026	चंद्र	31/03/2027	मंगल	17/01/2028	राहु	13/08/2028	गुरु	30/05/2029
चंद्र	15/06/2026	मंगल	20/04/2027	राहु	03/03/2028	गुरु	30/08/2028	शनि	27/07/2029
मंगल	02/07/2026	राहु	11/06/2027	गुरु	14/04/2028	शनि	20/09/2028	बुध	17/09/2029
राहु	14/08/2026	गुरु	27/07/2027	शनि	02/06/2028	बुध	08/10/2028	केतु	08/10/2029
चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
08/10/2029		08/08/2030		09/03/2031		07/09/2032		07/01/2034	
08/08/2030		09/03/2031		07/09/2032		07/01/2034		09/08/2035	
चंद्र	02/11/2029	मंगल	21/08/2030	राहु	31/05/2031	गुरु	11/11/2032	शनि	09/04/2034
मंगल	20/11/2029	राहु	22/09/2030	गुरु	12/08/2031	शनि	27/01/2033	बुध	30/06/2034
राहु	05/01/2030	गुरु	20/10/2030	शनि	06/11/2031	बुध	06/04/2033	केतु	02/08/2034
गुरु	14/02/2030	शनि	23/11/2030	बुध	23/01/2032	केतु	05/05/2033	शुक्र	07/11/2034
शनि	03/04/2030	बुध	23/12/2030	केतु	24/02/2032	शुक्र	25/07/2033	सूर्य	06/12/2034
बुध	17/05/2030	केतु	04/01/2031	शुक्र	25/05/2032	सूर्य	18/08/2033	चंद्र	23/01/2035
केतु	03/06/2030	शुक्र	09/02/2031	सूर्य	22/06/2032	चंद्र	28/09/2033	मंगल	26/02/2035
शुक्र	24/07/2030	सूर्य	20/02/2031	चंद्र	06/08/2032	मंगल	26/10/2033	राहु	23/05/2035
सूर्य	08/08/2030	चंद्र	09/03/2031	मंगल	07/09/2032	राहु	07/01/2034	गुरु	09/08/2035
चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
09/08/2035		07/01/2037		08/08/2037		09/04/2039		08/10/2039	
07/01/2037		08/08/2037		09/04/2039		08/10/2039		06/03/2040	
बुध	21/10/2035	केतु	19/01/2037	शुक्र	18/11/2037	सूर्य	18/04/2039	मंगल	17/10/2039
केतु	20/11/2035	शुक्र	24/02/2037	सूर्य	18/12/2037	चंद्र	03/05/2039	राहु	09/11/2039
शुक्र	14/02/2036	सूर्य	07/03/2037	चंद्र	07/02/2038	मंगल	14/05/2039	गुरु	28/11/2039
सूर्य	11/03/2036	चंद्र	24/03/2037	मंगल	14/03/2038	राहु	10/06/2039	शनि	22/12/2039
चंद्र	23/04/2036	मंगल	06/04/2037	राहु	14/06/2038	गुरु	05/07/2039	बुध	12/01/2040
मंगल	23/05/2036	राहु	08/05/2037	गुरु	03/09/2038	शनि	02/08/2039	केतु	21/01/2040
राहु	09/08/2036	गुरु	05/06/2037	शनि	08/12/2038	बुध	28/08/2039	शुक्र	15/02/2040
गुरु	17/10/2036	शनि	09/07/2037	बुध	04/03/2039	केतु	08/09/2039	सूर्य	22/02/2040
शनि	07/01/2037	बुध	08/08/2037	केतु	09/04/2039	शुक्र	08/10/2039	चंद्र	06/03/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

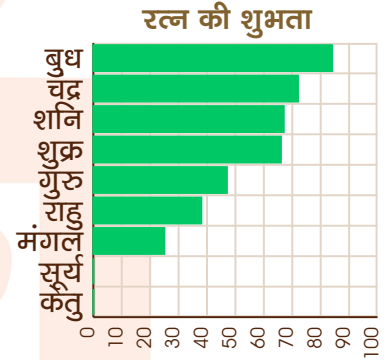
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	84%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	72%	सुख, धनार्जन
नीलम	शनि	67%	धनार्जन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
हीरा	शुक्र	66%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	47%	पराक्रम हानि, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
गोमेद	राहु	38%	शत्रु व रोग, हानि
मूंगा	मंगल	25%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	शत्रु व रोग, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	08/10/2023	0%	59%	25%	91%	47%	78%	73%	50%	9%
सूर्य	08/10/2029	0%	78%	38%	84%	55%	53%	55%	12%	0%
चंद्र	08/10/2039	0%	84%	25%	91%	47%	66%	67%	12%	0%
मंगल	08/10/2046	0%	78%	50%	72%	55%	66%	67%	12%	9%
राहु	08/10/2064	0%	59%	0%	84%	47%	72%	73%	56%	0%
गुरु	08/10/2080	0%	78%	38%	72%	61%	53%	67%	38%	0%
शनि	08/10/2099	0%	59%	0%	91%	47%	72%	80%	50%	0%
बुध	09/10/2116	0%	59%	25%	97%	47%	72%	67%	38%	0%
केतु	09/10/2123	0%	59%	38%	84%	47%	72%	55%	12%	22%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/03/2007-16/07/2007	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(08/10/2023 - 08/10/2029)

सूर्य की महादशा 08/10/2023 को आरम्भ होगी 6 वर्षों के बाद 08/10/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य षष्ठम भाव में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, ओज, साहस, पराक्रम और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है जबकि षष्ठम भाव स्वास्थ्य, सेवा, मता की ओर के सम्बन्धों, प्रतिद्वन्द्वियों और ऋण का सूचक है। अतः इस दशा में आपको प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, ऋण से मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपको उत्तम ओजस्विता और उत्साह की प्राप्ति होगी। इस दशा में आप सभी बड़े रोगों से मुक्त होंगे। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अपने उत्तम स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने के लिये आपको सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आपको हर क्षेत्र में अतिशयता का परित्याग करना चाहिए। आपको सरदर्द, प्रदाह आदि हो सकते हैं। आपकी उपेक्षा के कारण आँख तथा हृदय से संबंधित रोग हो सकते हैं।

अर्थ :

इस दशा में आप नौकरी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको मुकदमों में सफलता मिलेगी। आप ऋण से मुक्त होंगे। साझेदारों से धन की प्राप्ति का संकेत भी है। आप स्वभाव से उदार हैं, आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन होगा। मातृ-पक्ष से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। अगर फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करें तो आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा।

व्यवसाय :

आपको प्रतिद्वन्द्वियों और प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके लिये नौकरी उत्तम है। स्वतंत्र व्यवसाय कम लाभदायक होगा। आप एक अच्छे नेता हैं और किसी संस्था, निगम या बड़े संगठन के प्रधान हो सकते हैं। सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाएं आपकी जीवन-वृत्ति के लिये उपयुक्त हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अन्न तथा उपकरणों से सम्बन्धित व्यापार लाभदायक हो सकता है। क्रीड़ा सामग्री के व्यवसायियों को लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिये यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान मान-सम्मान तथा आमदनी में वृद्धि होगी और इच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसायियों व्यापारियों का भाग्योदय होगा, आमदनी अच्छी होगी और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। लाभ के संकेत हैं। जीवन-वृत्ति, व्यवसाय और व्यापार में प्रगति के लिये यह दशा उत्तम है।

परिवार (कुटुम्ब) :

अगर आप अपनी हठधर्मिता और आक्रामकता पर नियंत्रण रखें तो परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। बच्चों तथा जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। धैर्य तथा सतर्कता

की आवश्यकता है। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी और उन्हें सुख और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। अप्रत्याशित प्रगति होगी और अकस्मात लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

राजनीति, नागरिकशास्त्र तथा जन कल्याण से सम्बन्धित योजनाओं में भी आपकी रुचि होगी।



**अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(26/10/2025 - 14/08/2026)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 08/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 26/10/2025 को प्रारंभ होकर 14/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ोसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्च बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(14/08/2026 - 27/07/2027)**

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 14/08/2026 को प्रारंभ होगी और 27/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि बढ़ेगी, धन का संघय होगा, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। निवेश से लाभ होगा। शिशु का जन्म हो सकता है। धर्म में रुचि होगी। संतान के साथ मामूली मतभेद हो सकते हैं। आपको मामूली बीमारी हो सकती है। वसीयत आदि से अप्रत्याशित धन मिल सकता है। आपके बहुत से कार्य समाजसेवार्थ होंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा। आपके पिता को प्रयास से सफलता मिलेगी। माता की अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। उनके लिए लोकप्रियता, समृद्धि और यात्रा का योग है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। उनका विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
(27/07/2027 - 02/06/2028)**

आपकी सूर्य की महादशा 08/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 27/07/2027 को प्रारंभ होकर 02/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मानसिक और घरेलू सुख उपलब्ध रहेंगे और धन का लाभ होगा। कार्यों में सफलता, प्रसिद्धि और लोकप्रियता हासिल होंगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामापक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होगा। आयात-निर्यात आपके लिए लाभकारी हो सकता है। ऋण प्राप्त हो सकता है और पुराना कर्ज अदा हो सकता है।

आपके जीवनसाथी के विदेश से संपर्क, यात्राएं और धनव्यय हो सकते हैं। पिता की रुचि ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म में होगी; उन्हें व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेंगे। माता को सुख-सुविधाएं रहेंगी। भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है, संभवतः माता पक्ष से। आपकी संतान का समय भाग्यशाली रहेगा। वे भाषण देने और विचारों के आदान-प्रदान में पटु होंगे। आपके सेवारत बच्चे धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल, समृद्ध होंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली होंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से धन मिलेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। त्वचा, हृदय और तंत्रिकाओं के रोगों से बचाव करें। बुध के मंत्र का जाप करें और हरे पदार्थों का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - केतु
(02/06/2028 - 08/10/2028)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 08/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/06/2028 को आरंभ होकर 08/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में यात्रा, निवास में परिवर्तन आदि की संभावना है। आपकी अध्यात्म और गूढ़ विद्या में रुचि हो सकती है। शत्रु सिर उठा सकते हैं। परंतु अंततः आप विजयी रहेंगे।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

**महादशा :- चन्द्र
(08/10/2029 - 08/10/2039)**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 08/10/2029 को आरम्भ और 08/10/2039 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मजबूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नये विषयों के अध्ययन के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है। आप कोई पाठ्यक्रम

आरम्भ कर सकते हैं अथवा अपने ज्ञान में सुधार के लिए अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं।
आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।



**अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(08/10/2029 - 08/08/2030)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 08/10/2029 को प्रारंभ होकर 08/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 08/10/2029 को प्रारंभ होकर 08/08/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी राशि में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

मन के कारक चंद्र के चतुर्थ भाव में स्थित होने से आपके माता-पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचल संपत्ति और वाहनसुख का योग है। नये आवास या संपत्ति का उपयोग कर सकते हैं या नया वाहन खरीद सकते हैं। शैक्षणिक योग्यता में वृद्धि के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र के 11000 जाप करें। केवल भावनाओं में बहकर कार्य न करें, बुद्धि का प्रयोग करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(08/08/2030 - 09/03/2031)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 08/10/2029 को प्रारंभ होकर 08/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 08/08/2030 को प्रारंभ होकर 09/03/2031 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 8, 11, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप में क्रोध, छल-कपट की भावना में वृद्धि होगी। उदर रोग आदि व्याधियों से ग्रस्त हो सकते हैं। मायूसी बढ़ेगी। मन विचलित रहेगा। आपके जीवनसाथी और संतान का समय कष्टप्रद रहेगा। सामान्यतः आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा मगर जल्दबाजी में निर्णय लेने के कारण बाद में पछताएंगे। धैर्य धारण करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।